میں مجوزہ قومی ہینڈ لوم ڈیولپمینٹ کارپوریشن ریاستی کارپوریشن اور ریاستوں کے کوآپریٹو ادارے اسی وقت اپنا رول ادا کر سکتے ہیں جب ان کو کتائی اور کمپوزٹ وارن سے سال بھر تک ایک ہی دام پر ہینڈ لوم کی ضرورت کا سارا سوت چینی کی لدوم کے طریقے پر سرکار فراہم کرنے کی ذمہ داری لے مرکزی حکومت کے اس سلسلے میں فوری اور بنیادی قدم اٹھانے کی ضرورت ہے اور مرکزی وزیر تجارت کو اس سلسلے میں بیان دینا چاہئے -]

(vi) DEMOLITION OF STAFF QUARTERS IN THE GOLE MARKET AREA OF NEW DELHI.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (नई दिल्ली): उपाध्यक्ष महोदय, आज जब दिल्ली में बड़े पैमाने पर अनधिकृत बस्तियों का निर्माण हो रहा है और ऐसे निर्माण को रोकने का कोई प्रयत्न नहीं हो रहा है, यह बड़े दुख और रोष की बात है कि 25 वर्षों से सरकारी क्वार्टरों में रहने वाले घरेलू कर्मचारियों को उनके बने बनाए घरों से उजाड़ा जा रहा है। दिनांक 5 दिसम्बर 1981 को जब गोल मार्केट के निकट बने हुए घरेलू कर्मचारी क्वार्टरों में रहने वाले लोग रोटी और रोजी कमाने अपने काम पर गये हुए थे केन्द्रीय सार्वजनिक निर्माण विभाग के मजदूरों ने पुलिस की सहायता से उन घरों पर धावा बोल दिया, जीने तोड़ दिये, किवाड़ उखाड़ दिये और गरीबों का सामान—उन का सामान होता ही कितना है—बाहर सड़क पर फेंक दिया। मैं उसी रात को लगभग 12 बजे के करीब इन दुखी व्यक्तियों की चीख-पुकार सुन कर घटना स्थल पर गया था। कड़कड़ाती सर्दी, वर्षा, खुले आसमान के नीचे, इन निरीह तथा निर्दोष व्यक्तियों का कुनबा इधर उधर बिखरे हुए सामान के बीच और पुलिस की घेराबन्दी के मध्य आग ताप कर घड़ियां बिता रहा था।

इन अभागे गरीबों ने मुझे जो कुछ बताया उसके अनुसार ये लोग वर्षों से इन सर्वेंट क्वार्टरों में रहते हैं और पानी आदि का खर्चा भी देते हैं। जब केन्द्रीय कर्मचारियों के ये क्वार्टर तोड़े गये और नये क्वार्टरों का निर्माण आरम्भ हुआ, तो ये लोग बेघरबार हो कर कहां जाएंगे, इसका विचार नहीं किया गया और न कोई समुचित व्यवस्था ही की गई। कर्मचारियों के अनुसार ये अपना मामला अदालत में भी ले गये हैं और अदालत का फैसला 11 दिसम्बर को होना है। किन्तु अदालत के फैसले की प्रतीक्षा किये बिना ही सार्वजनिक निर्माण विभाग ने पुलिस की सहायता से इन्हें उजाड़ दिया। यह घटना संसन भवन से थोड़ी ही दूर पर हुई है। कहा जाता है कि यहां बगीचा लगाने के लिए इन मकानों को गिराना जरूरी है। बसे बसाये लोगों को उजाड़ कर जो बाग लगाना चाहते हैं उनके हृदय में कितनी मानवीय संवेदना है, यह कहने की आवश्यकता नहीं है। सवाल यह है कि इन क्वार्टरों को गिराने और लोगों को बेघर बनाने का कार्य क्या तब तक नहीं रोका जा सकता था जब तक सर्दी कुछ कम नहीं हो जाती और बच्चों की पढ़ाई का साल भी पूरा नहीं हो जाता।

मेरी मांग है कि सार्वजनिक निर्माण विभाग के मंत्री इस सम्बन्ध में सारी स्थिति को स्पष्ट करें। सार्वजनिक निर्माण विभाग का काम निर्माण होना चाहिए, ध्वंस नहीं।